वार्तालाप–513 कलकत्ता तारीख–08.02.08
Disc.CD No.513, dated 8.2.08 at Calcutta

0.01–2.05
प्रश्न– बाबा, जैसे ब्रह्मा और शंकर के द्वारा, प्रजापिता के द्वारा सम्मुख पढ़ाई चल रहा है ऐसे विष्णु के द्वारा सम्मुख पढ़ाई चलेगा क्या?
बाबा– पढ़ाई पढ़ाने वाला एक है या दो हैं?
प्रश्न– एक है।
बाबा– पढ़ाई पढ़ाने वाला एक है। विष्णु के द्वारा प्रैक्टिकल कर्म होगा। क्या? बाप ही नई–2 बातें बताते हैं पढ़ाई में। और कोई मनुष्य मात्र नई–2 बातें नहीं बताता है। बाप नई दुनिया बनाते ही हैं नई बातें बताकर के और नई बातों की ही पढ़ाई है। शास्त्रों की तो पुरानी बातें 63 जन्म से सुनते चले आये और पुरानी बातें सुनते–2 दुनिया पुरानी हो जाती है। इसलिए बोला– वो सब है पानी की गंगायें। पानी को मंथने से कोई नई चीज़ नहीं निकलती है लेकिन ज्ञान सागर को मंथने से नये–2 रत्न निकलते हैं। बाप की वाणी ही नई बात सुनाती है। बाकी विष्णु को तो भुजाओं के रूप में मददगार दिखाया है। रावण को अनेक मुख दिखाते हैं और विष्णु को भुजायें दिखाते हैं। क्या मतलब? विष्णु मददगार है; इसलिए भुजायें दिखाते हैं।

Time: 0.01-2.05
Student: Baba, just as teaching is going on face to face through Brahma and Shankar, through Prajapita, similarly, will teaching take place face to face through Vishnu also?
Baba: Is the teacher one or two?
Student: One.
Baba: The teacher is one. The practical action will take place through Vishnu. It is only the Father who narrates new points in the knowledge. No other human being narrates new points. The Father creates the new world by narrating new points and the study is about the new points only. We have been listening to the old topics of the scriptures for 63 births and while listening to the old topics, the world becomes old. This is why it was said, all those are (river) Ganges of water. Nothing new emerges by churning water but new gems emerge by churning the ocean of knowledge. Only the Father's versions reveal new points. As for the rest, Vishnu is shown to have helpers in the form of arms. Ravan is shown to have many heads and Vishnu is shown to have [many] arms. What does it mean? Vishnu is a helper; this is why arms are shown.

2.57–13.58
जिज्ञासु– बाबा, जो मोर है वो तीन बार ऊँची उडान उड़ता है फिर चौथी बार उड़ान उड़ नहीं सकता।
बाबा– हाँ जी।
जिज्ञासु– तो वार्तालाप में बोला है उस पर मनन चिंतन करो।
बाबा– मोर पंख की जो निशानी है वो किसको दिखाई जाती है? कृष्ण को दिखाई जाती है। अपने सर के ऊपर मोर का पंख धारण किया। पूँछ का मतलब क्या होता है?
जिज्ञासु– देहभान।

Time: 2.57-13.58
Student: Baba, a peacock flies high in three attempts; then it cannot fly for the fourth time.
Baba: Yes.
Student: It has been said in a discussion to think and churn about it.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Who is shown to have a sign of the peacock feather? Krishna is shown to have it. He adorned the peacock feather on his head. What is meant by a tail?
Student: Body consciousness.

बाबा– देहभान तो है; लेकिन देहभान भी मयूर की निशानी हैं। साधारण पूँछ नहीं है, बहुत शोभनीक पूँछ है और उसको अपने मस्तक में धारण किया हुआ है। और कोई पक्षी ऐसा नहीं होता जिसकी इतनी सुंदर पूँछ हो और इतना सुंदर नृत्य हो। ये ज्ञान ड़ांस की बात है। और उड़ान भरता है तो तीन ही उड़ान भरता है। कब की बात है? कब से ये तीन उड़ानें शुरू होती है? 76 से पहली उड़ान, 88–89 में दूसरी उड़ान, त्रेतायुगी क्षत्रीय वर्ण की और...(किसी ने कहा 98 में तीसरी उड़ान।) ...। नहीं। 76 में पहली उड़ान 88–89 में पूरी होती है, 89–89 में दूसरी उड़ान शुरू होती है और 98 में पूरी होती है और तीसरी उड़ान उड़ता है कलियुगी शूटिंग की। वो तीसरी उड़ान भरने के बाद मोर को चौथी उड़ान भरते हुए नहीं दिखाया जाता। शास्त्रों में लिखा हुआ है ब्रह्मा ने तीन बार सृष्टि रची और तीनों बार पसंद नहीं आई तो बिगाड़ दिया। चौथी बार के लिए नहीं कहते। इसका मतलब क्या हुआ? कि आखरी बार वो आत्मा अपनी उड़ान में सफल हो जाती है। कौनसी उड़ान? देह अभिमान की पूँछ में वो देहभान नहीं रहता; सुंदरता आ जाती है। ऐसी सुंदरता आ जाती है जो और कोई पक्षी में नहीं देखने में आती। इसलिए भारत में भारत का नैशनल बर्ड मोर माना जाता है। अच्छी उड़ान भरता है।

Baba: There is body consciousness indeed, but the body consciousness also is a sign of the peacock. It is not an ordinary tail. It is a very beautiful tail and he has adorned it on his forehead. There is no other bird with such a beautiful tail and which dances so beautifully. It is about the dance of knowledge. And when it flies, it flies only in three attempts. It is about which time? From when do these three flights begin? First flight from (19)76, the second flight of Silver Age Kshatriya class in (19)88-89. And…? (someone said the third flight in 98). …and in (19)98… No. The first flight that begins in (19)76 is completed in (19)88-89; the second flight begins in (19)88-89 and is completed in (19)98. And the third flight of Iron Age shooting begins. After making those three attempts to fly, the peacock is not shown to make a fourth attempt to fly. It has been written in the scriptures that Brahma created the world thrice and he did not like it all the three times, so he destroyed it. It is not said [like this] for the fourth attempt. What does it mean? That soul becomes successful in flying in its last attempt. Which flight? Body consciousness does not remain anymore in the tail of body consciousness; it becomes beautiful. It attains such beauty that is not visible in any other bird. This is why peacock is considered to be the national bird of India. It flies well (the third time).

जिज्ञासु– ऊँची उड़ान माना?
बाबा– ऊँची उड़ान का मतलब ये है कि देहभान के बिगर काम विकार नहीं होता है और काम विकार भी जो है वो सात्विक होता है, सतोप्रधान होता है, रजोप्रधान होता है और तमोप्रधान भी होता है। कृष्ण को जो पूँछ दिखाई गई है वो सतोप्रधानता की निशानी है। कोई भी आत्मा दुख का अनुभव नहीं कर सकती। नहीं तो इसको मुख्य काम विकार कहा जाता है। विकार – वि माने विपरीत कार्य। विपरीत माना क्या? श्रीमत है सुख देने की। सुख दो और सुख लो। परंतु देहभान में आकर के मनुष्य काम विकार में ऐसा अंधा हो जाता है कि सुख–दुख का ख्याल ही बुद्धि में से निकल जाता है। देहभान चरम सीमा पर पहुँच जाता है, इन्द्रियाँ कन्ट्रोल से बाहर हो जाती है या दूसरे शब्दों में कहें काम विकार में अंधा हो जाता है। वो बात कृष्ण में नहीं होती है।

Student: What is meant by a high flight?
Baba: High flight (*oonchi uraan*) means that there is no lust without body consciousness and even lust is *satvik*, *satopradhan, rajopradhan* and *tamopradhan*. The tail (of peacock feather)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

that has been shown on Krishna is an indication of purity. No soul can experience sorrow (from him). Otherwise, it is called the main vice (*vikaar*)- lust. *Vi-kaar* means *vi* means *vipreet kaarya* (opposite actions). What is an opposite action? There is *Shrimat* (the elevated direction) to give happiness. Give happiness and take happiness. But because of coming in body consciousness, a human being becomes so blind in lust that the thought of happiness or sorrow disappears from the intellect. The body consciousness reaches the extreme level. The bodily organs go out of control or in other words it can be said that a person becomes blind in lust. It is not so about Krishna.

इसलिए ये ऊँगली उठाते हैं विदेशी ये कृष्ण के पीछे सोलह हजार एक सौ आठ कहाँ से भागने लगी? क्या जवाब है? जवाब है ब्रह्मा के पीछे क्यों नहीं सोलह हजार होगी? है तो वही कृष्ण की सोल? और उसमें भी मुरली में बताया ये दादा लेखराज की कहानी नहीं है जो इतनी भाग खड़ी हुई। किसकी कहानी है? प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। बाद में लकब अपने ऊपर ले लिया। नाम रख दिया ब्रह्माकुमारी विद्यालय। परंतु लकब लेने वाले वो धोबीघाट की गहराई को नहीं समझ सके। अरे, बैल पना छोड़ दो तो तुम्हारे पीछे भी भागेंगी, सींग मारना बंद करो। बाप कहते हैं विकार भी चार अवस्थाओं से प्रसार होते हैं। द्वापर के आदि में विकार भी कैसी स्टेज में थे? सात्विक स्टेज में थे। अभी कलियुग के अंत में मनुष्य विकारी ऐसे बन पड़े हैं, ऐसे कामेशु, कोधेशु हो जाते हैं अगर काम की आश पूरी न हो तो जान से भी मार देते हैं। तो कहाँ कृष्ण का पूँछ और कहाँ जानवरों का पूँछ। पूँछ–2 में अंतर जरूर है। इसलिए मोर पंख का गायन है।

This is why these foreigners raise a finger on this topic: how did these sixteen thousand one hundred and eight (souls) start running behind Krishna? What is the answer? The answer is: why did the sixteen thousand not go behind Brahma? It is the same soul of Krishna. And even in that case it has been said in the Murli that it is not the story of Dada Lekhraj that so many of them ran away (from their homes to meet Baba). Whose story is it? It is Prajapita Brahma's story. Later on he(Brahma) assumed the title. He named it *Brahmakumari Vidyalay*. But those who assumed the title could not understand the depth of the laundry (*dhobighat*). Arey, leave the bullish nature; then they will run behind you as well; stop hitting with your horns. The Father says, vices also pass through the four stages. In the beginning of the Copper Age in what stage were the vices? They were in a pure stage. Now in the end of the Iron Age human beings have become so vicious, they become so lustful and so wrathful that if their desire for lust is not fulfilled, they even kill that person. So, there cannot be a comparison between the tail (of peacock feather) of Krishna and the tail of animals. There is certainly a difference between the tails. This is why there is a praise of the peacock feather.

जिज्ञासु– चौथी बार लास्ट में पकड़ में आ जाते हैं इसका मतलब क्या? संकल्प ब्रह्मा के....ऐसे
बाबा– नेक्स्ट टू गॉड़ इज शंकर, नेक्स्ट टू गॉड़ इज कृष्ण, नेक्स्ट टू गॉड़ इज प्रजापिता, नेक्स्ट टू गॉड़ इज नारायण। तो जो सवारी दिखाने वाली बात है; किसके ऊपर सवार होने की बात है और कौन सवार होता है?
जिज्ञासु– बैल के ऊपर शंकर।
बाबा– बैल कौन है?
जिज्ञासु– ब्रह्मा बाबा।
बाबा– बैल के रूप में ब्रह्मा को दिखाया हुआ है। शिव के मंदिर में नाली के किनारे दिखाते हैं। संगमयुगी कृष्ण का पार्ट अलग है और सतयुगी कृष्ण का पार्ट अलग है। सतयुग में जो कृष्ण पैदा होता है, बच्चे के रूप में वो पुरूषार्थ कहाँ से लेकर के आया? कौनसे समय का पुरूषार्थ है? सन् 68 तक के पुरूषार्थ की निशानी है। नहीं तो कृष्ण वाली आत्मा भी वायब्रेशन से बच्चे पैदा करने वाली शक्तिशाली बन जाये। वो नहीं बनती है। संगमयुगी कृष्ण ये बाप का पार्ट है,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सतयुगी कृष्ण बच्चे का पार्ट है। तो तीन उड़ानें जो भरी हुई दिखाई गई हैं वो बाप की बात है। तीन उड़ानें पूरी होती हैं और छलांग लगाकर के शंकर बैल पर सवार हो जाता है।

Student: What is meant by getting caught in the fourth attempt? Brahma's thoughts…..
Baba: Next to God is Shankar, next to God is Krishna, next to God is Prajapita, next to God is Narayan. So, the topic of riding….it is about riding on whom and who rides?
Student: Shankar on the bull.
Baba: Who is the bull?
Student: Brahma Baba.
Baba: Brahma has been shown in the form of a bull. He is shown near the drain (of *Shivling*) in the temple of Shiv. The part of the Confluence Age Krishna is different and the part of the Golden Age Krishna is different. Krishna who is born in the Golden Age in the form of a child; where did he make *purusharth* (spiritual effort) for that? At which time did he make *purusharth*? It is an indication of the *purusharth* made till (19)68. Otherwise, the soul of Krishna could also become powerful enough to give birth to a child through vibrations. It does not become so. The part of Confluence Age Krishna is of the father; the part of the Golden Age Krishna is of the child. So, three attempts of flight that have been shown is about the Father. When the three flights are over, Shankar takes a leap and sits on the bull.

54.45–56.15
जिज्ञासु– बाबा एक माता है नंद माता वो बेसिक कोर्स हो गया, डेढ़ साल से ज्ञान सुन रहे हैं, एड़वांस कोर्स भी मैक्सिमम समझ लिया है। अभी जब सुनते हैं कि बाबा आया है तो रोती रहती है क्योंकि उनका युगल मधुबन में भी एक बार आने नहीं दिया और गीतापाठशाला में भी जाने के लिये चांस नहीं देते हैं।
बाबा– तो उनको समझाओ कि पूर्वजन्मों का हिसाब–किताब तुम्हारा है या नहीं है? खुश रहो। इतना तो जान लिया कि बाप आया हुआ है और उसका ज्ञान तुमको मिल रहा है। बाप ने तुमको उठाया तो है। दुनिया तो ऐसे ही भटक रही है। रोने की क्या दरकार है?
जिज्ञासु– तो बोल रहीं हैं हमारा भट्ठी कैसा होगा आप बाबा से पूछिय।
बाबा– उनको बताओ जो विजयमाला की हेड है लक्ष्मी बनने वाली है उसी की भट्ठी नहीं हुई है तुम काहे के लिए भठियाय रही हो? वो रोना शुरू कर दे? भाग्यशाली समझो।
जिज्ञासु–.....
बाबा– हाँ, जी। भाग्य बनेगा बाबा को याद करने और सेवा करने से।
जिज्ञासु–.....
बाबा– हाँ, जी।
जिज्ञासु– रोते हुए बच्चे को बाप नहीं पसंद करते।
बाबा– अरे, वो सूर्यवंशी बच्चे रोते हैं क्या?
जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– फिर?
जिज्ञासु– हँसते हैं।

Time: 54.45-56.15
Student: Baba, there is a mother named Nand Mata. She has done the basic course; she has been listening to the knowledge since the last one and a half years; she has also understood the advance course to the maximum extent. Now when she hears that Baba has come, she keeps crying because her husband did not allow her to visit the *Madhuban* even once and does not give her a chance to visit the *Gitapathshala* either.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: So, explain to her, "do you have karmic account of the past births or not? Be happy. You have at least come to know that the Father has come and you are getting His knowledge. The Father has at least uplifted you. The world is simply wandering. Where is the need to cry?"
Student: So, she is telling me to ask Baba, "How will I undergo *bhatti*".
Baba: Tell her, "when the head of the *Vijaymala* (rosary of victory) herself, who is going to become Lakshmi has not done *bhatti*, why are you worrying?" Should she [Lakshmi] start crying? Consider yourself fortunate.
Student said something.
Baba: Yes. Fortune is made by remembering Baba and by doing service.
Student said something.
Baba: Yes.
Student: The Father does not like the children who cry.
Baba: Arey, do the *Suryavanshi* (belonging to the sun dynasty) children cry?
Student: No.
Baba: Then?
Student: They laugh.

56.18–56.30
जिज्ञासु– भगवान का अर्थ क्या है?
बाबा– भगवान का अर्थ है भाग्यवान। जो सबसे ज्यादा भाग्यवान है वो ही भगवान है।

Time: 56.18-56.30
Student: What is the meaning of *'Bhagwaan'* (God)?
Baba: *'Bhagwaan'* means *bhagyavaan* (lucky). The one who is the luckiest is *Bhagwaan*.

56.35–57.45
जिज्ञासु– बाबा एक मुरली में बोला है दृष्टि से कोई पाप भस्म नहीं करता।
बाबा– दृष्टि से?
जिज्ञासु– पाप भस्म नहीं करता।
बाबा– बाप दृष्टि देने से कोई पाप भस्म नहीं करते हैं। हाँ, दृष्टि देने से इतना है कि जिनको प्यार की दृष्टि मिलती है वो आत्मायें स्वतः ही ऊपर उड़ने लगती हैं; पहचान पूर्वक जिनको दृष्टि मिलती है। उनका नशा चढ़ने लगता है, संग का रंग लगता है। दृष्टि से सृष्टि सुधरती भी है और दृष्टि से सृष्टि बिगड़ती भी है। दृष्टि, आँखे सबसे जास्ती धोखेबाज भी हैं। सबसे जास्ती धोखा खाने वाला अंग है आँखें। लेकिन धोखेबाज से धोखा खायेंगी या जो सच्चा बाप आया हुआ है वो धोखेबाज होगा?

Time: 56.35-57.45
Student: Baba, it has been said in a Murli that no sins are burnt through vision (*drishti*).
Baba: Through *drishti*?
Student: It does not burn sins.
Baba: The Father does not burn sins by giving *drishti.* Yes, the only help that *drishti* gives is that the souls which get loveful *drishti* start flying upwards automatically; those who get *drishti* after recognizing Him. Their intoxication starts rising, they get coloured by His company. The world transforms as well as gets spoiled through *drishti* . The *drishti*, the eyes deceive the most. The organs that are deceived the most are the eyes. But are they deceived by a cheat or will the true Father who has come, be a cheat?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

57.50–1.00.20
जिज्ञासु– बाबा ये भाई पूछता है सतयुग में कैसे पुकारेंगे?
बाबा– किसको?
जिज्ञासु– एक–दूसरे को कैसा पुकारेंगे?
बाबा– नाम होगा ना।
जिज्ञासु– वहाँ इशारे से बात चीत होगी ना?
बाबा– वहाँ बोल–2 ज्यादा होती ही नहीं है। इशारे की ही भाषा होती है। दिल की बात दिलवर को समझ में आ जाती है। आँख का इशारा ही बहुत काफी है। अरे, वहाँ तो पक्षी भी ऐसे–2 होंगे उनको यूँ इशारा किया तो ऊपर उड़ेंगे, नीचे इशारा करेंगे तो नीचे आ जायेंगे, यूँ इशारा करेंगे दायीं ओर, यूँ इशारा करेंगे तो बायीं ओर। जानवर भी इशारे को समझते हैं वहाँ। मनुष्यों की तो बात ही छोड़ो।

Time: 57.50-1.00.20
Student: Baba, this brother asks, how will we call in the Golden Age?
Baba: Whom?
Student: How will we call each other?
Baba: There will be a name, will it not?
Student: Conversation will take place through gestures, will it not?
Baba: There, they do not speak much. There is a language of gestures only. The beloved one understands the matters of the heart. The gesture of eyes is enough. *Arey*, there even the birds will be such that if you gesture at them like this, they will fly upwards; if you indicate downwards, they will come down. If you gesture like this, they will move in the right direction. If you gesture like this, they will move in the left direction. There, even the animals understand gestures. Leave aside the question of human beings.

जिज्ञासु– बाबा नाच–गाना भी होगा क्या? गाना मुख से कुछ उच्चारण होगा?
बाबा– आज के जो बड़े–2 ऑफिसर है वो ऑफिस में बैठना पसंद करते हैं कि क्लब में जा करके मस्ती मारना पसंद करते है?
जिज्ञासु– मस्ती मारना पसंद करते हैं।
बाबा– तो यही मौज मस्ती होगी सतयुग में। हाँ, वहाँ क्लबों में देह अभिमान होता है, सतयुग में देहभान नहीं होगा। ड़ांस करेंगे, संगीत गायेंगे, वाद्य यंत्र बजायेंगे, खेलेंगे।

Student: Baba, will there also be dancing and singing? Will they sing songs through the mouth?
Baba: Do the big officers of today like to sit in the office or to enjoy in clubs?
Student: They like to enjoy.
Baba: So, there will be the same enjoyment in the Golden Age. Yes, there is body consciousness in clubs; there will not be body consciousness in the Golden Age. They will dance, they will sing, they will play musical instruments; they will play.

जिज्ञासु– सबसे बड़ा मेहनत बाबा, खाना बनाना, उसका जुगाड करना उसका वो मेहनत से तो बाबा....
बाबा– हाँ, वहाँ सबसे बड़ी मेहनत तो पेट की चिंता नहीं। यहाँ पेट की चिंता के लिए मरे जा रहे है सब। इस पेट की भी वहाँ चिंता नहीं होगी और स्थूल पेट की भी चिंता नहीं होगी। प्रकृति सबकुछ मुहैया करेगी।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, the most difficult task is to cook; Baba it is hard to make arrangement for the same.....
Baba: Yes, there you will not have this biggest worry of filling your stomach. Here everyone is dying in the worries for [filling] the stomach. There will not be any worry for [filling] this [intellect like] stomach there and there will not be any worry about the physical stomach either. Nature will provide everything.

जिज्ञासु– बाबा वहाँ भाषा इशारा का भाषा होगा कि मुख से बोलेगा?
बाबा– यहाँ जो देवात्मायें होंगी वो बाप के पार्ट के लिए जो मुरलियों में, अव्यक्त वाणियों में इशारे मिले है वो देवात्मायें समझती हैं कि जो मनुष्य हैं वो समझते हैं या राक्षस समझते हैं? जो मनुष्य हैं, राक्षस हैं वो तो अभी भी नहीं समझ रहे हैं। जो देवात्मायें हैं वो समझ रही हैं।

Student: Baba, will there be a language of gestures or will they speak through the mouth?
Baba: Here, do the deity souls understand the hints that have been given about the Father's part in the Murlis, Avyakta Vanis or do the human beings or the demons understand them? The human beings, the demons do not understand even now. The deities are able to understand them.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info